Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

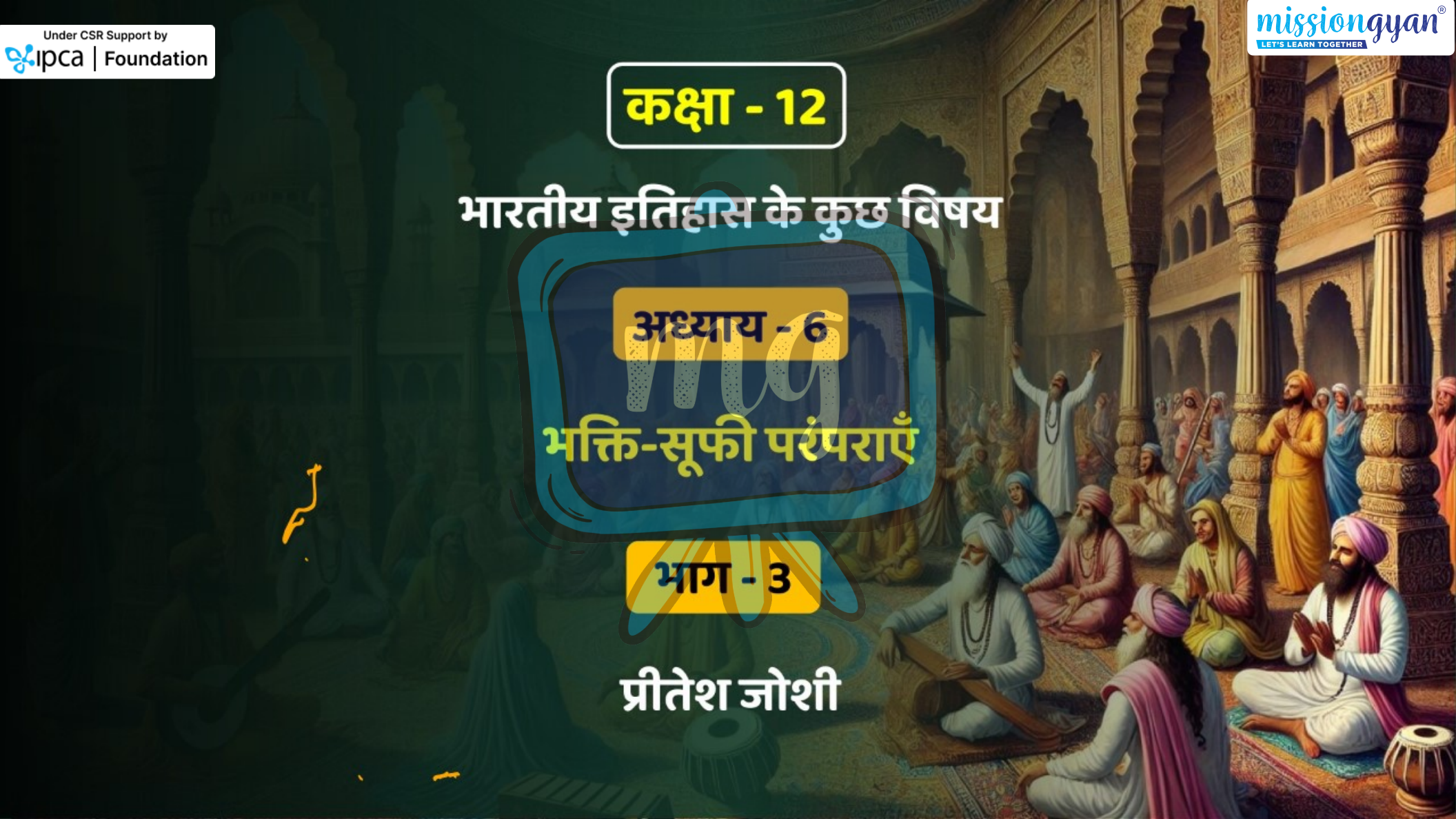
भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 6

भक्ति-सूफी परंपराएँ

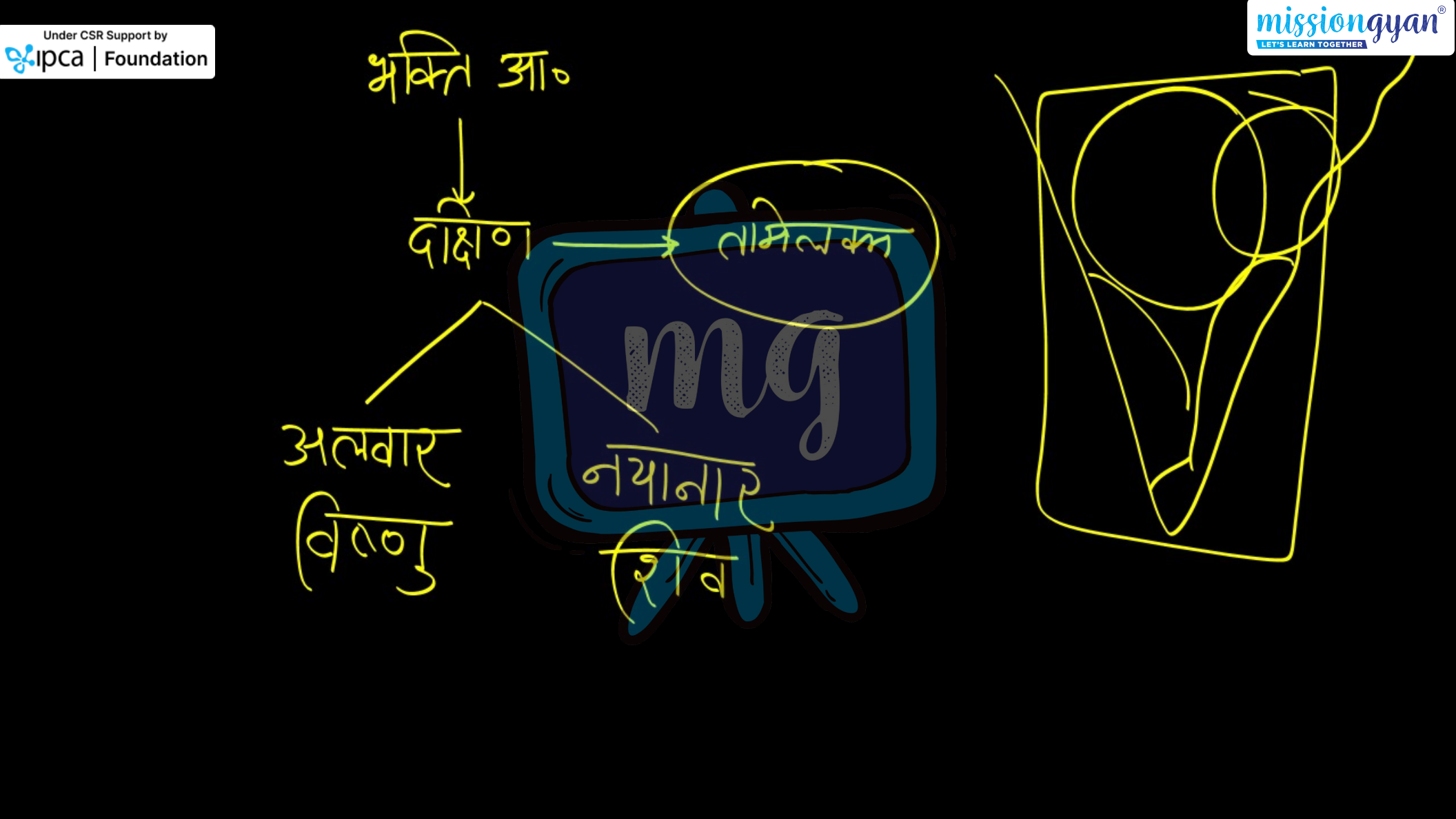
भाग - 3

प्रीतेश जोशी



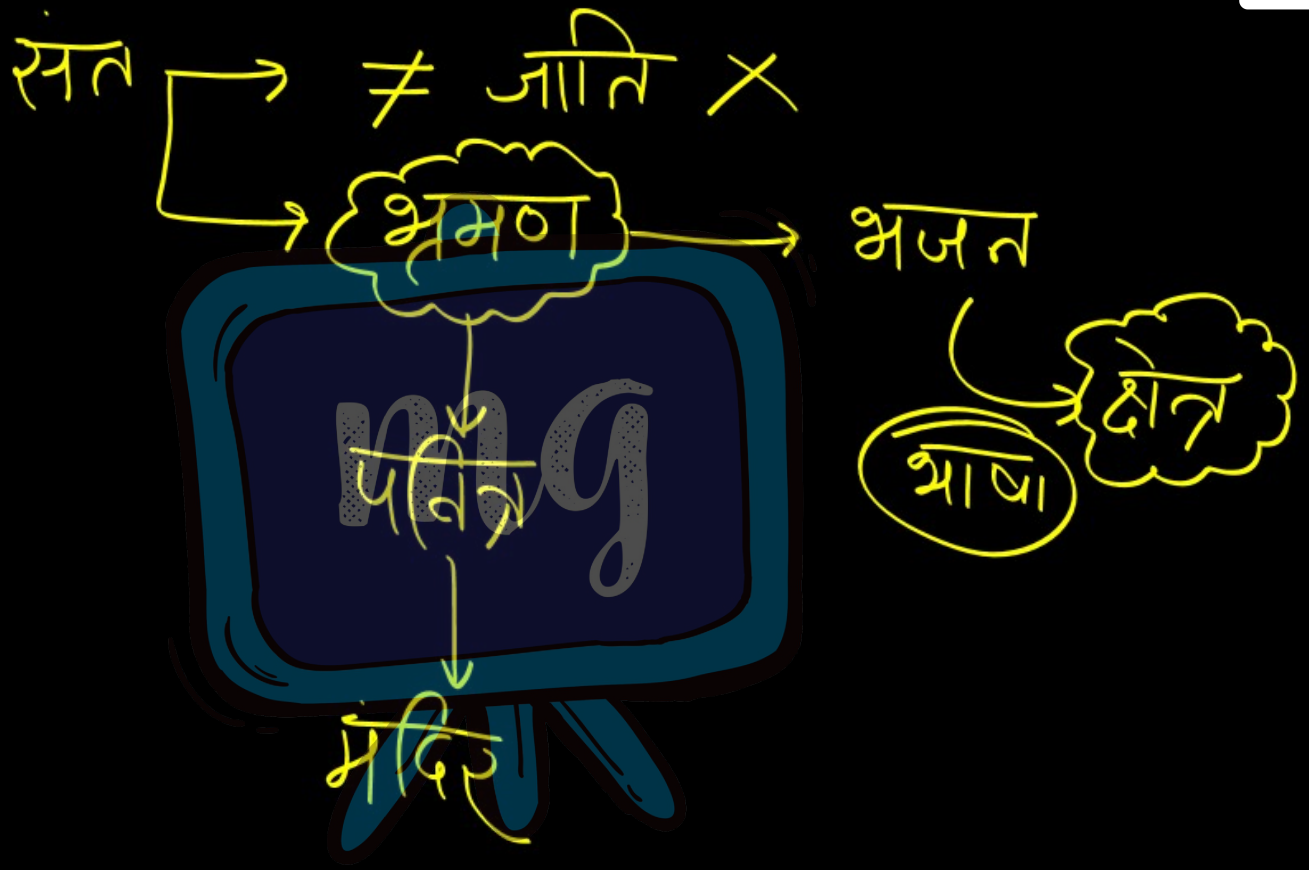
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जाति के प्रति दृष्टिकोण

- अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा व ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज़ उठाई।
- भक्ति संत विविध समुदायों से थे जैसे ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान और कुछ तो उन जातियों से आए थे जिन्हें "अस्पृश्य" माना जाता था।
- अलवार संतों के एक मुख्य काव्य संकलन नलयिरादिव्यप्रबंधम् का वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता था। इस तरह इस ग्रंथ का महत्व संस्कृत के चारों वेदों जितना बताया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

स्त्री भक्त :-

- दक्षिण भारत में भक्ति परम्परा की सबसे बड़ी विशिष्टता इसमें स्त्रियों की उपस्थिति थी।
- अंडाल नामक अलवार (विष्णु भक्त) स्त्री के भक्ति गीत व्यापक स्तर पर गाये जाते थे तथा आज भी गाये जाते हैं।
- इसी प्रकार एक स्त्री शिव भक्त करइक्काल अम्मइयार हुई।
- इन्होंने भक्ति हेतु घोर तपस्या का मार्ग अपनाया।

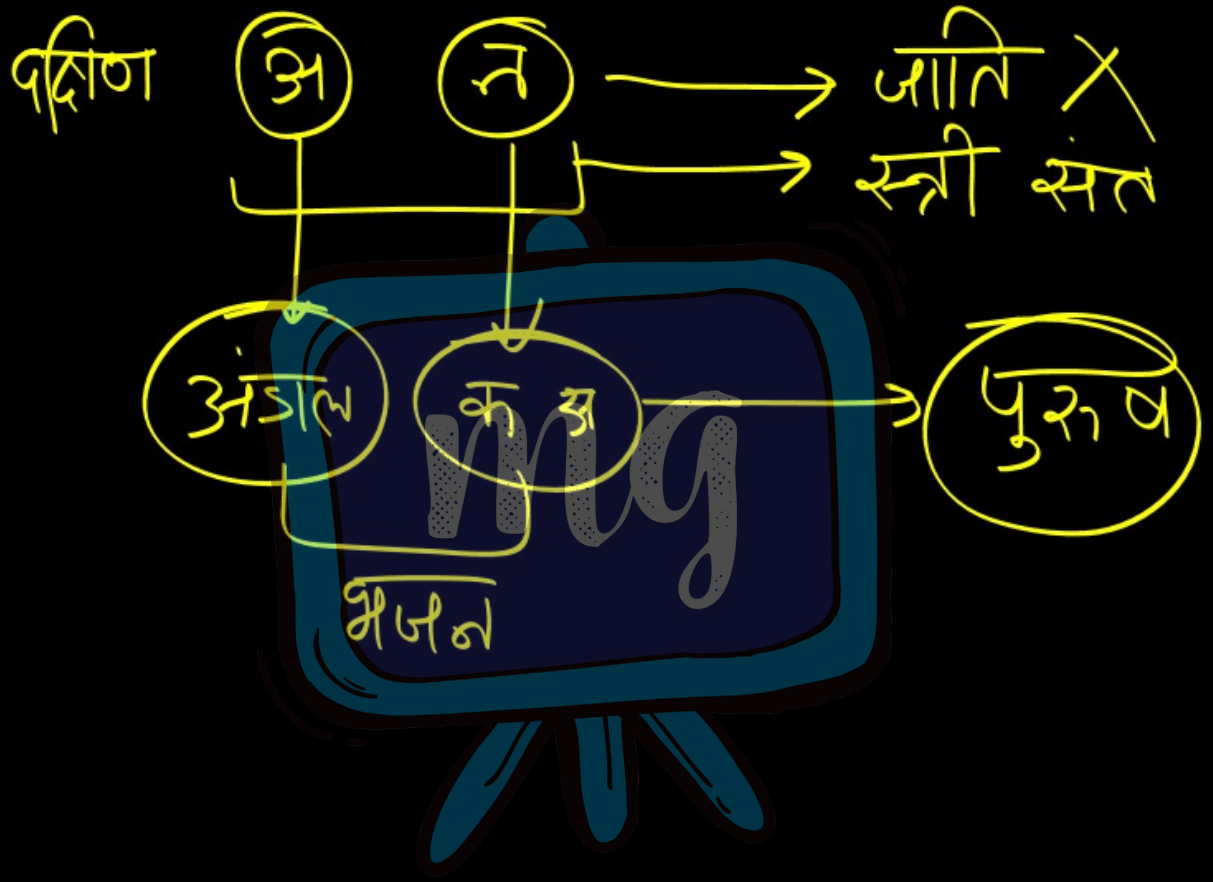
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- नयनार (शिव भक्त) परंपरा में उनकी कविताओं/रचनाओं को सुरक्षित किया गया।
- इन स्त्रियों ने अपने सामाजिक कर्त्तव्यों का परित्याग किया। ये भिक्षुणी समुदाय या अन्य वैकल्पिक व्यवस्था की सदस्य नहीं बनी।
- इनकी रचनाओं और जीवन पद्धति से ऐसा प्रतीत होता है कि इन्होंने उस समय प्रचलित पितृसत्तात्मक आदर्शों को चुनौती दी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. अलवार और नयानार संतो का जाति प्रथा के प्रति क्या रवैया था?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

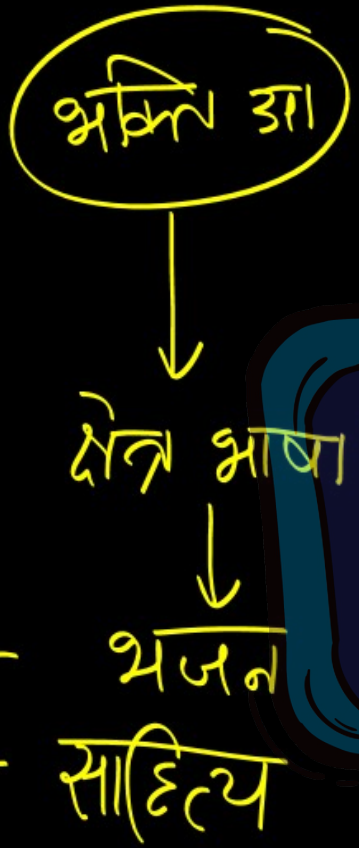
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q क्या दक्षिण भारत में भक्ति आन्दोलन के समय हमें महिला संतो का वर्णन मिलता है? किन्ही दो के नाम लिखे?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

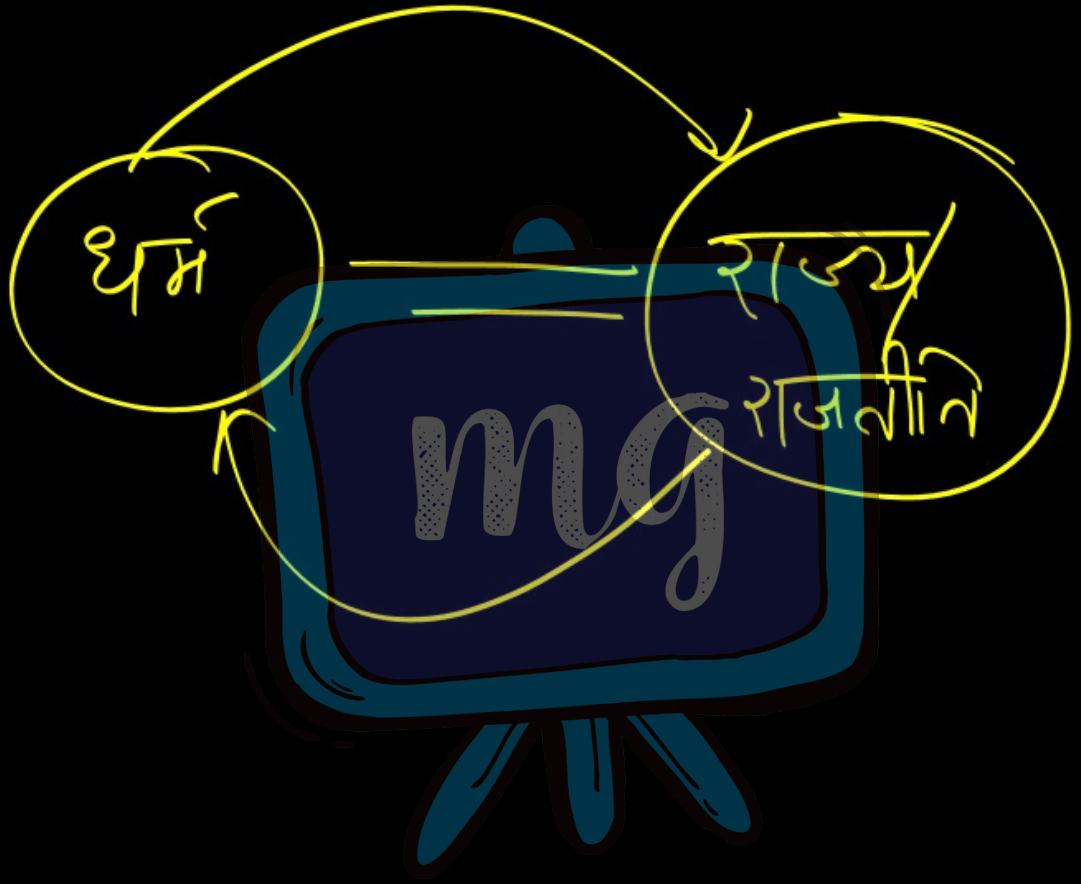


भक्ति साहित्य का संकलन

- दक्षिणी भारत में दसवीं शताब्दी आते-आते बारह अलवर (विष्णुभक्त) सन्तों की रचनाओं का संकलन किया गया।
- इस संकलन को "नलयिरादिव्यप्रबंधम्" नाम से जाना जाता है।
- इस का अर्थ "चार हजार पावन रचनाएँ" है।
- दसवीं शताब्दी में अप्पार संबंदर और सुंदरार की भक्ति की कविताएँ "तवरम" नामक संकलन में रखी गई।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

राज्य के साथ संबंध :-

- प्रथम सहस्त्राब्दी ई. के उत्तरार्ध में तमिल क्षेत्र में कई राज्यों का उद्भव व विकास हुआ।
- जिनमें पल्लव और पांड्य राज्य शामिल थे।
- इस समय दक्षिण भारत में जैन व बौध धर्म मौजूद थे।
- इन धर्मो को व्यापारी व शिल्पी वर्ग का आश्रय प्राप्त था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

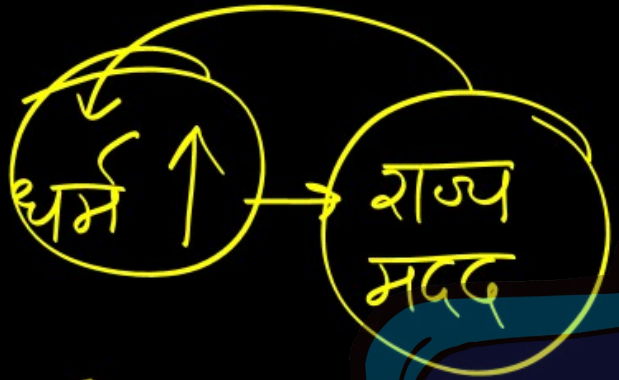
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. भक्ति आन्दोलन के दौरान धर्म और राज्य के बीच संबंधों को स्पष्ट करें?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



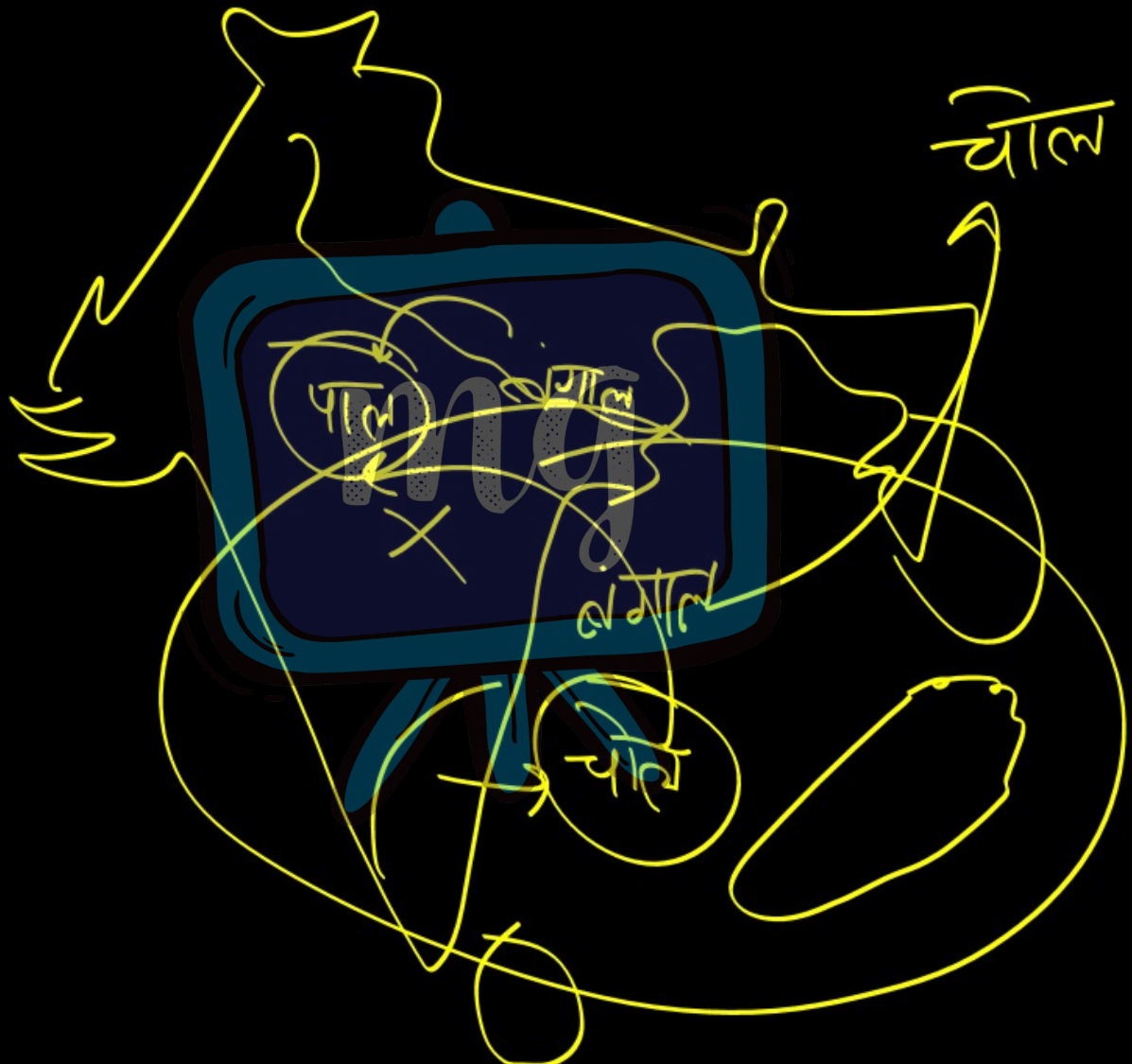
धर्म ↑ – राज्य मदद

धर्म ↓ – राज्य विरोध

- इन धर्मों को राजकीय आश्रय, संरक्षण और अनुदान यदा-कदा ही प्राप्त होता था।
- तत्कालीन तमिल भक्ति रचनाओं की एक मुख्य विषय वस्तु बौध व जैन धर्म के प्रति उनका विरोध है।
- इतिहासकारों के अनुसार विरोध का मुख्य कारण धार्मिक समुदायों में राजकीय अनुदान को लेकर मुकाबला रहता था।

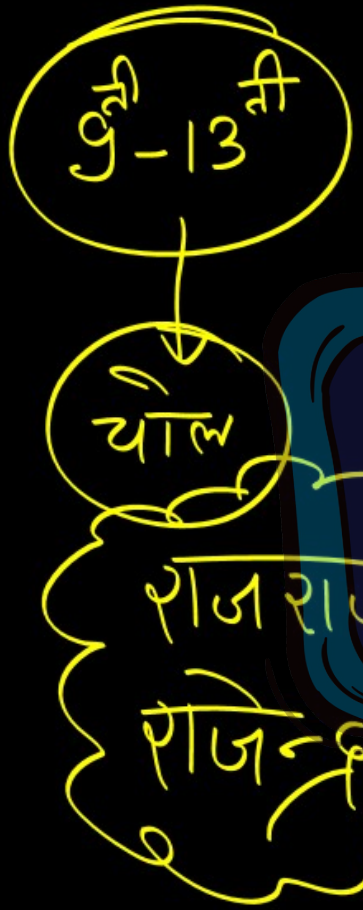
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

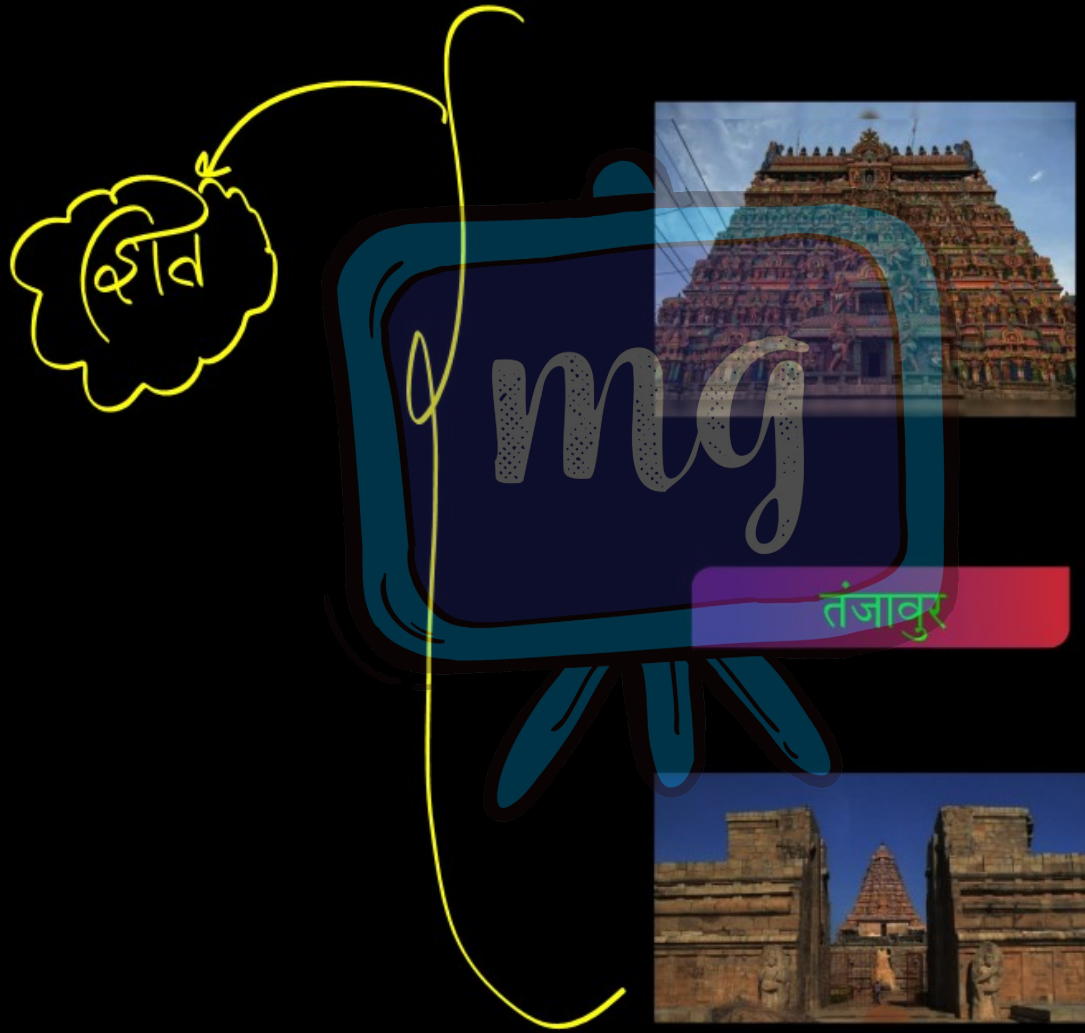
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- नवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत में शक्तिशाली चोल सम्राटों ने ब्राह्मणीय और भक्ति परंपरा को समर्थन किया।
- इन्होंने विष्णु और शिव मंदिरों के निर्माण हेतु भूमि अनुदान दिए।
- चोल सम्राटों की मदद से दक्षिण में चिदम्बरम, तंजावुर और गंगैकोंडचोलपुरम में विशाल शिव मंदिरों का निर्माण हुआ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



चिदम्बरम

तंजावुर



गंगैकोंडचोलपुरम

Under CSR Support by
ipca | Foundation

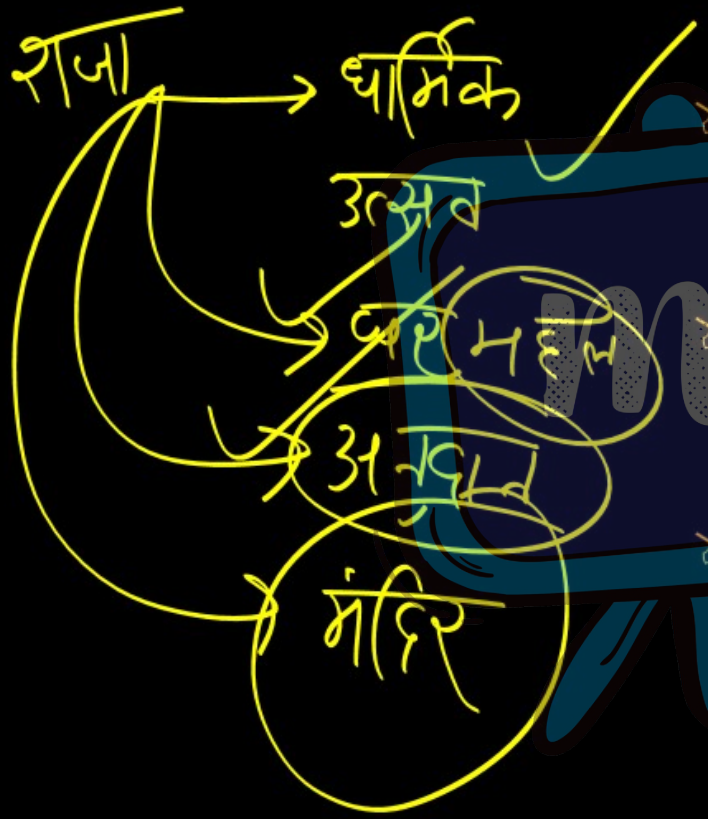
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- कांस्य से ढाली गई शिव प्रतिमाओं का निर्माण भी इसी काल में हुआ।
- दक्षिण में अलवार व नयनार संत, वेल्लाल कृषकों से सम्मानित होते थे।
- तत्कालीन शासकों ने इसी कारण से उनका समर्थन पाने का प्रयास किया।
- चोल सम्राटों ने दैवीय समर्थन या अंश होने का दावा किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

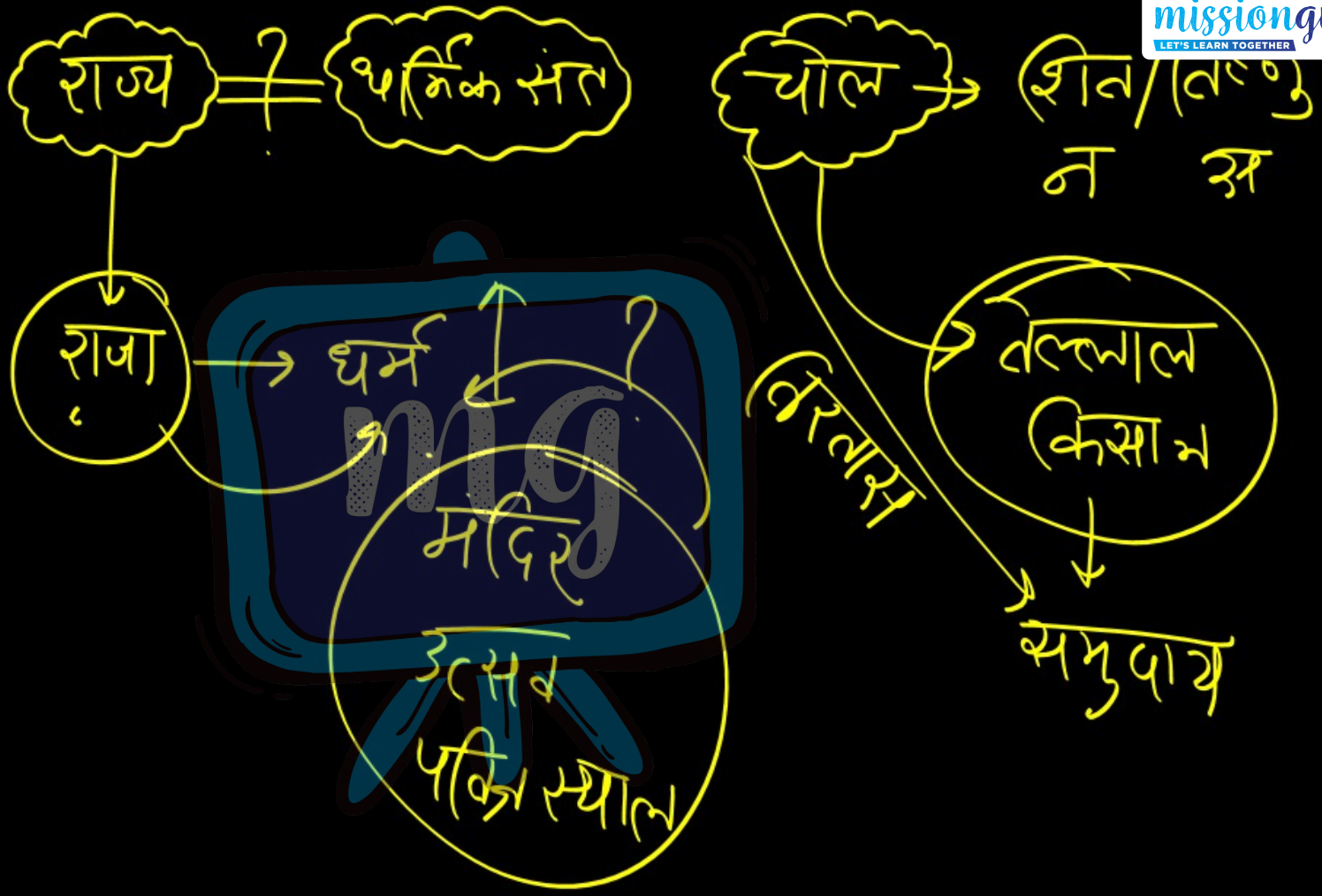
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- सत्ता के प्रदर्शन के लिए सुंदर मंदिरों का निर्माण करवाया।
- मंदिरों में सुन्दर पत्थर व धातुओं से सुसज्जित मूर्तियां स्थापित की।
- चोल सम्राट परांतक प्रथम ने संत कवि अप्पार संबंदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएँ एक शिव मंदिर में स्थापित करवाई जिन्हें उत्सव में एक जुलुस में निकाला जाता था।

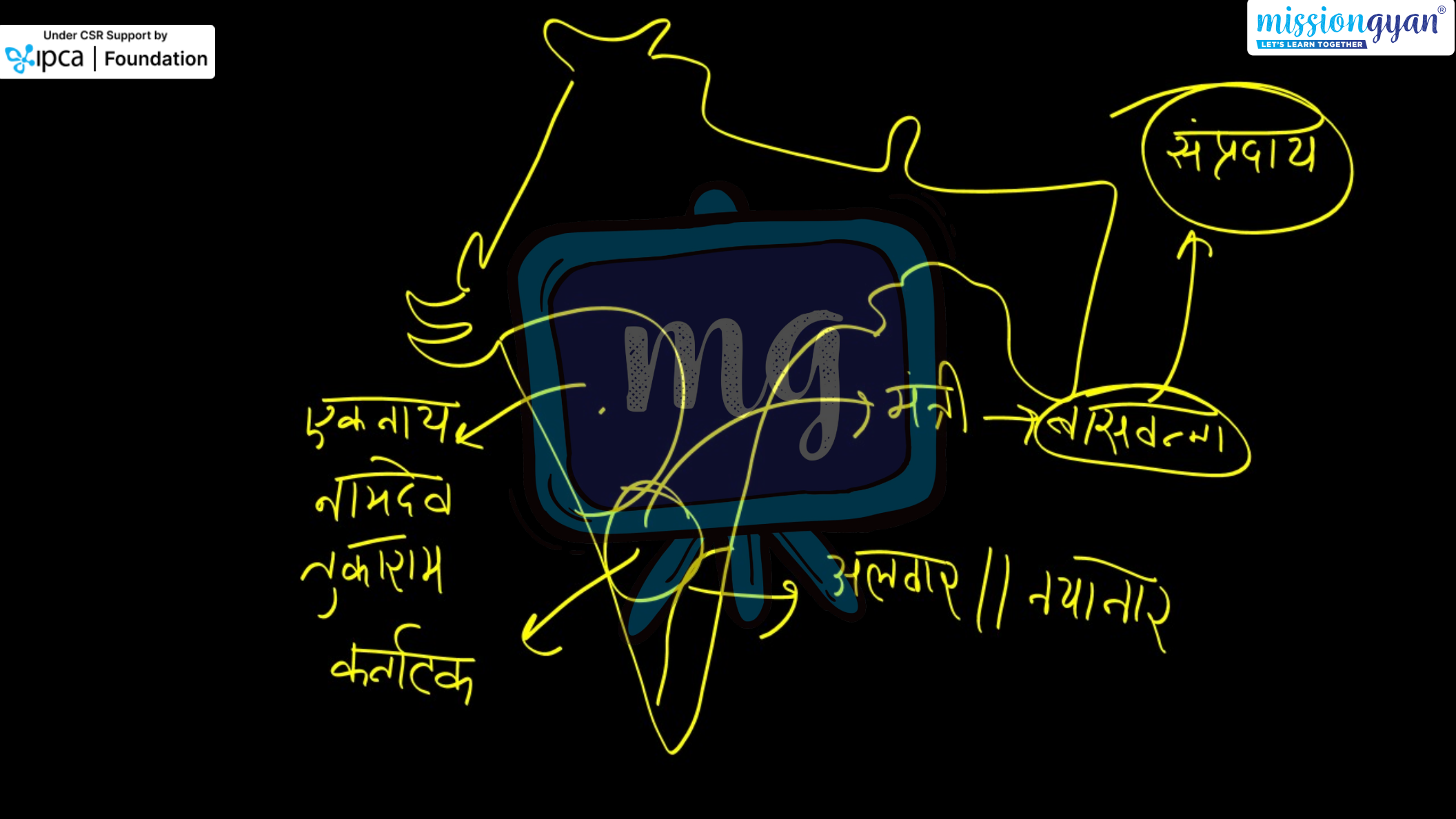
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



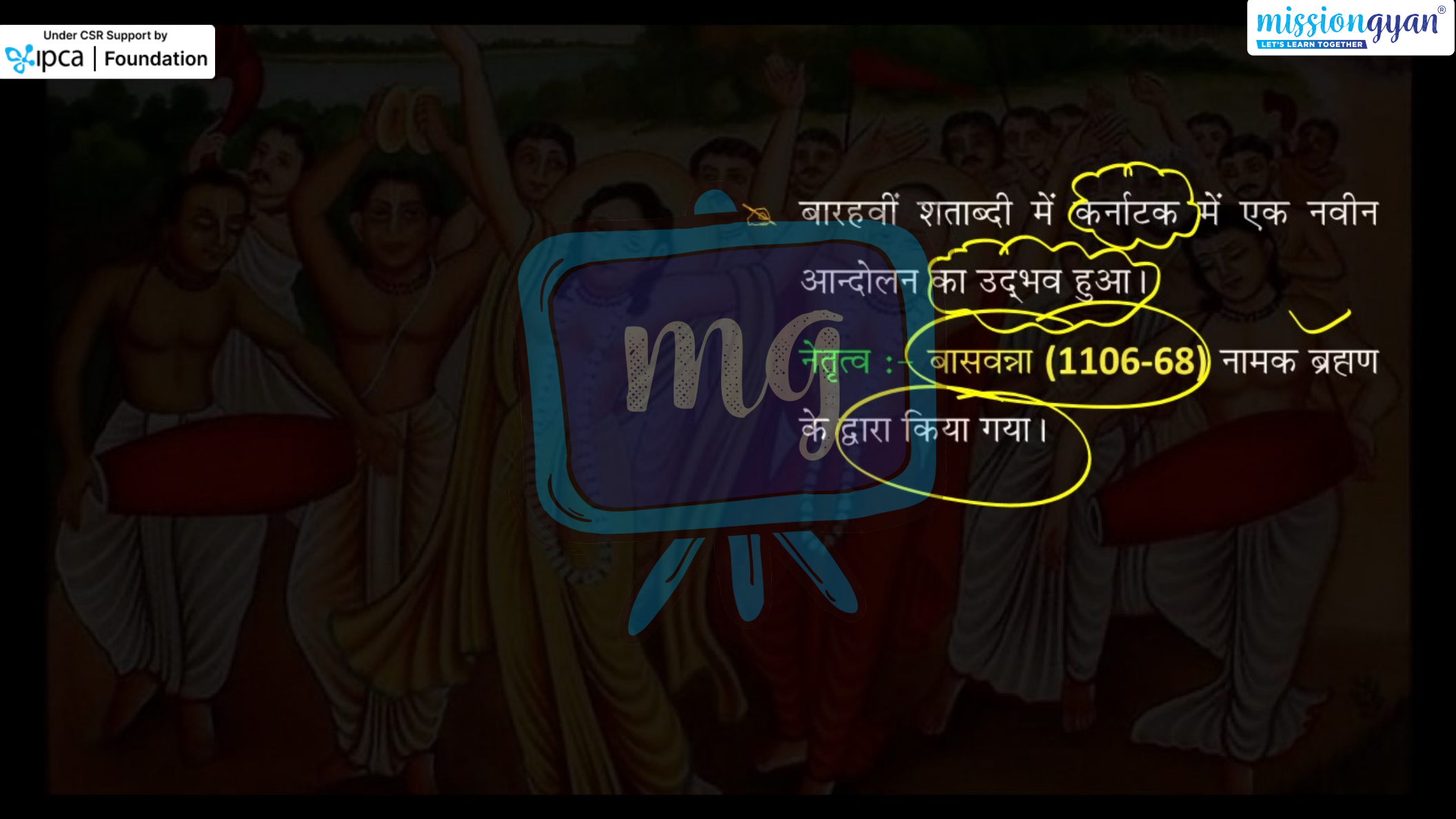
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक में एक नवीन आन्दोलन का उद्भव हुआ।
- नेतृत्व :- बासवन्ना **(1106-68)** नामक ब्रह्मण के द्वारा किया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

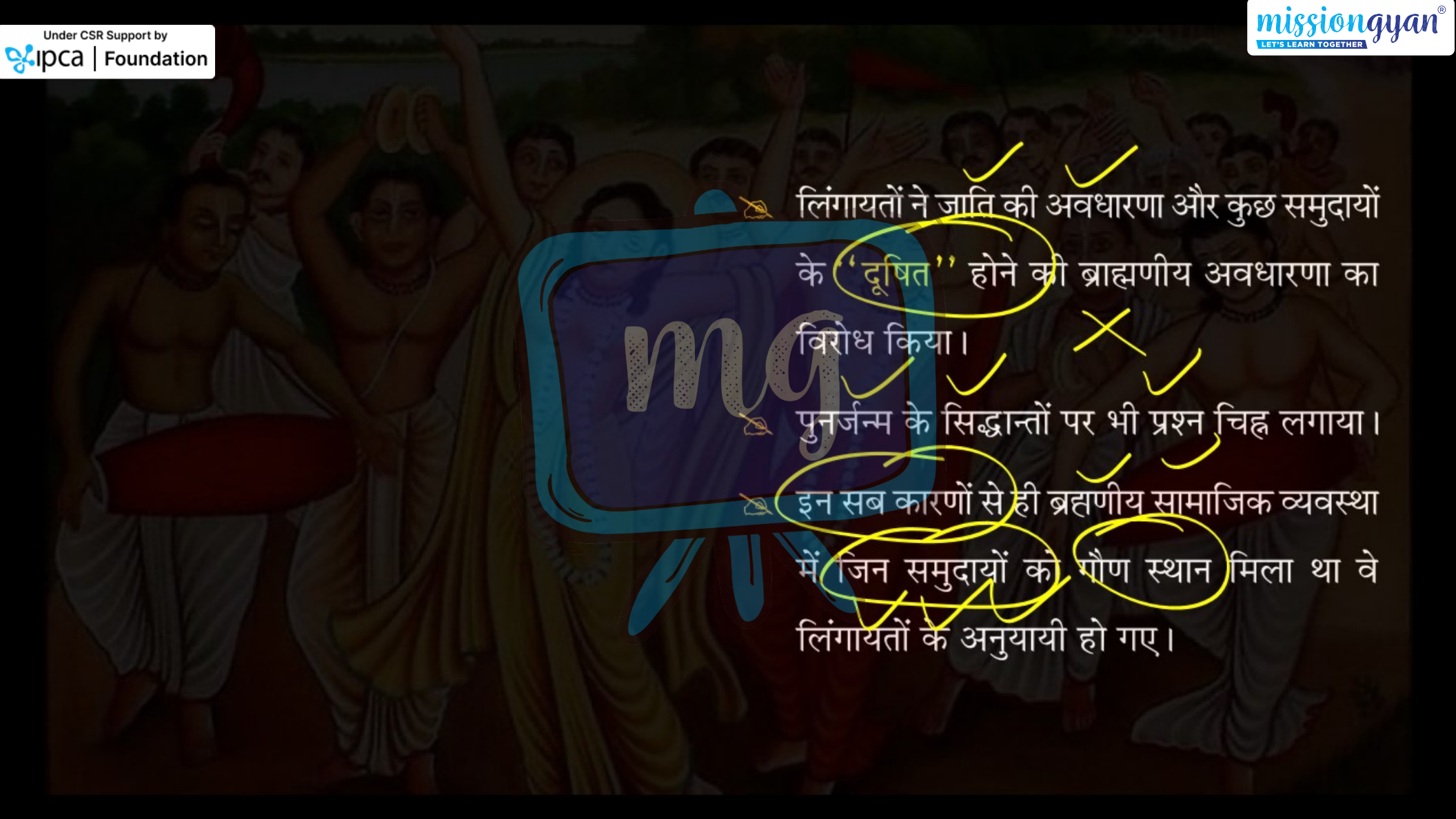
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बासवन्ना

- ये कलचुरी के राजा के दरबार में मंत्री थे।
- इनके अनुयायी वीरशैव (शिव के वीर) व लिंगायत कहलाए।
- ये शिव की आराधना लिंग के रूप में करते है।
- लिंगायत समुदाय के पुरुष वाम स्कंध (बायां कंधा) पर चाँदी के एक पिटारे में एक लघु लिंग को धारण करते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- लिंगायतों ने जाति की अवधारणा और कुछ समुदायों के "दूषित" होने की ब्राह्मणीय अवधारणा का विरोध किया।
- पुनर्जन्म के सिद्धान्तों पर भी प्रश्न चिह्न लगाया।
- इन सब कारणों से ही ब्रह्मणीय सामाजिक व्यवस्था में जिन समुदायों को गौण स्थान मिला था वे लिंगायतों के अनुयायी हो गए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ब्राह्मणीय

लिंगायतों ने वयस्क विवाह और विधवा पुनर्विवाह आदि को भी मान्यता प्रदान की, जिन्हे धर्मशास्त्रों में अस्वीकार किया गया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

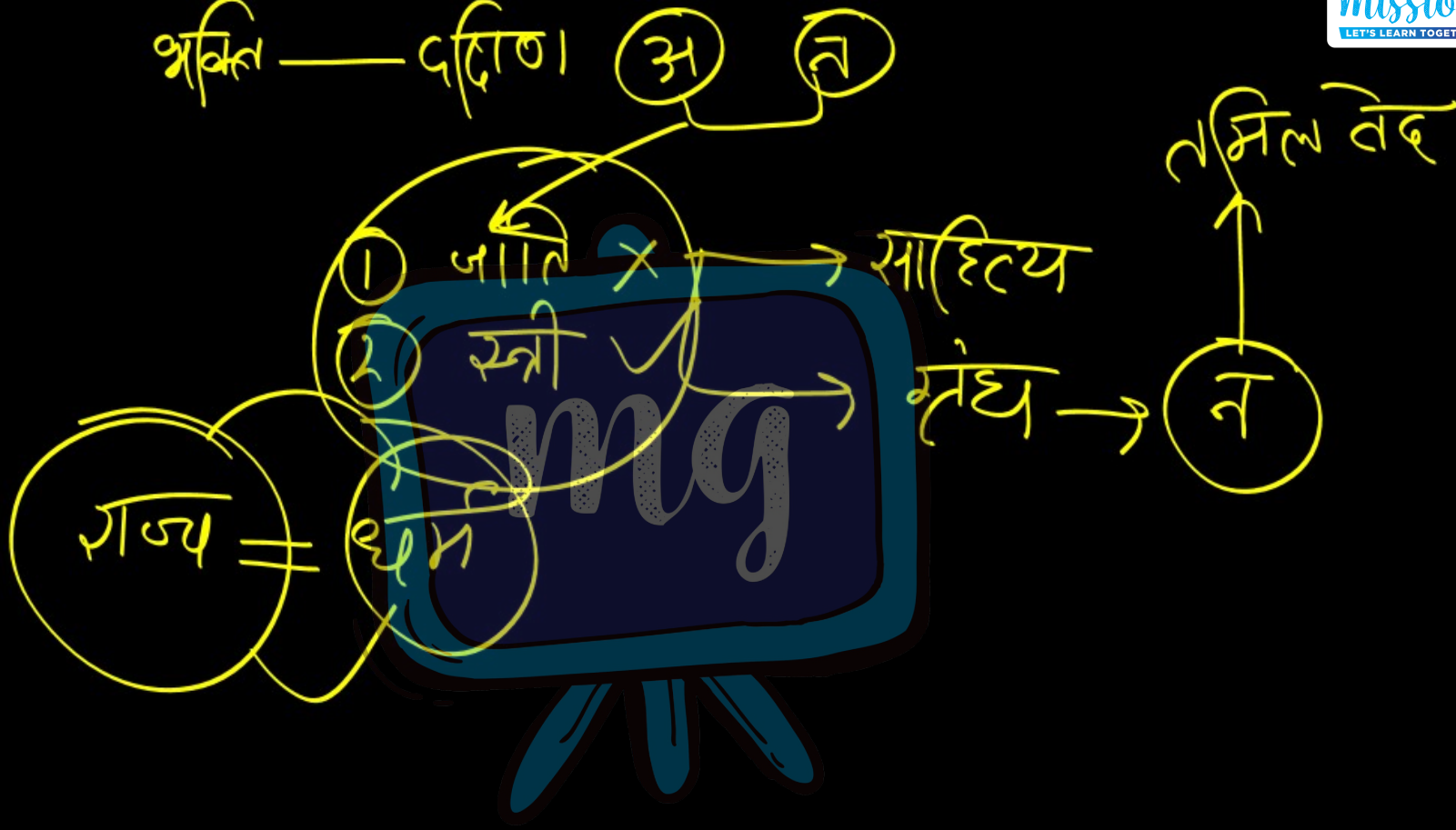
अनुष्ठान और यथार्थ संसार

यह बासवन्ना द्वारा रचित एक वचन है:

जब वे एक पत्थर से बने सर्प को देखते हैं
तो उस पर दूध चढ़ाते हैं
यदि असली साँप आ जाए तो कहते हैं
"मारो-मारो"।
देवता के उस सेवक को, जो भोजन परोसने
पर खा सकता है वे कहते हैं "चले जाओ!
चले जाओ।"
किन्तु ईश्वर की प्रतिमा को जो खा नहीं
सकती, वे व्यंजन परोसते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q लिंगायत समुदाय पर
एक लेख लिखते
(100 शब्द)

